RAWATSAR P.G. COLLEGE

'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)

DATE: 25 January 2025

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)

Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

भारतीय संस्कृति पर विज्ञान एवं तकनीकी का प्रभाव

डॉ. पिंकी योगी, सहायक आचार्य, दर्शनशास्त्र, स.पृ.चौ.राजकीय महाविद्यालय,अजमेर, yogipinkey@gmail.com

शोध सारांश

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में से एक है, इसमें समरसता (शांतिपूर्ण सहअस्तित्व), अपरिग्रह, संयम, लोक कल्याण प्रभृति मूल्यों के आधार पर आचरण का औचित्य - बोध निर्धारित किया जाता रहा है। भारतीय संस्कृति समयानुसार बदलाव के प्रति संगति बनाए रख पाई है। विज्ञान एवं तकनीकी, जो की सत्य एवं वास्तविकता के अन्वेषण एवं अनुप्रयोग के साधन है, के विकास के साथ भारतीय संस्कृति सामंजस्य बनाती दिखती है।

सामान्यतः नैतिकता (जो कि संस्कृति के अनेक मूल्यों में से एक माना जाता है) एवं विज्ञान को परस्पर विरोधी के रूप में देखा जाता है लेकिन वास्तविकता यह नहीं है । प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय संस्कृति के वास्तविक स्वरूप एवं विज्ञान तकनीकी के साथ इसके संबंधों एवं परस्पर प्रभाव पर एक यथार्थ दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा।

बीज वाक्यांश : समरसता, अपरिग्रह, औचित्यबोध, यथार्थ

व्यक्ति एवं समाज के आचरण के नियमन के लिए भारत में प्राचीन काल से अनेक मानक निर्धारित किए जाते रहे हैं। सरल शब्दों में, मानकों के इस सामूहिक रूप को संस्कृति कह सकते हैं। किसी भी समाज की सामूहिक चेतना जिन आदर्शों या मूल्यों का अनुकरण करती है उस मूल्य व्यवस्था को भी संस्कृति का नाम दिया जा सकता है। मूल्य समाज में कुछ निश्चित मान्य व्यवहार के मानकों को प्रस्तुत करते हैं तथा समाज के सदस्यों से यह आशा की जाती है कि वह अपना आचरण इन मानकों के अनुसार बनाये रखें। इससे सामाजिक व्यवहार में सन्तुलन, स्थिरता एवं एकरूपता आती है। एस. आबिद हुसैन के अनुसार, "संस्कृति किसी एक समाज में पायी जाने वाली उच्चतम मूल्यों की वह चेतना है जो सामाजिक प्रथाओं, व्यक्तियों की चित्तवृत्तियों, भावनाओं, मनोवृत्तियों, आचरण के साथ-साथ, उसके द्वारा भौतिक पदार्थों को विशिष्ट स्वरूप दिए जाने में अभिव्यक्त होती है।" 1 शास्त्रों में संस्कृति व्यक्ति एवं समाज के मानसिक परिष्करण से संबंधित बताई गई है। संस्कृति से संबद्ध व्यक्ति निरंतर बोध के उच्च मानकों की ओर गमन करता है। यशदेव शल्य के अनुसार "संस्कृति जातीय व्यक्तित्व है। संस्कृति को जातीय व्यक्तित्व कहने का अर्थ है कि अनुभव, प्रवृत्ति, व्यवहार, चेष्टा आदि का एक ऐसा न्यूनाधिक निश्चित संस्थान (रूप-सज्जा-आकार) होता है जो मानव व्यक्तियों से स्वतन्त्र विद्यमान होता है और उनके अस्तित्व का अतिक्रमण करता है।" 2

'संस्कृति' शब्द चाहे अनेक अर्थों में प्रयुक्त हो लेकिन अन्ततः यह मानव चेतना के उत्कर्ष से सम्बन्धित है। संस्कृति का निर्माण मनुष्य करता है। संस्कृति का परिमार्जन, विस्तार एवं आवश्यकता पड़ने पर उसमें परिवर्तन भी मनुष्य का ही कार्य माना जाता है। चूंकि भारत एक प्राचीन देश है इसलिए इसकी सांस्कृतिक परंपरा भी प्राचीन काल से निरंतर गतिमान है। समयानुसार भारतीय सांस्कृतिक परंपरा विभिन्न युगों की परिस्थितियों, चुनौतियां और आवश्यकताओं के अनुसार तब्दील होती रही है।संस्कृति को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समझने का तात्पर्य है कि संस्कृति में किन मायनों में निरन्तरता है और किन मायनों में विच्छेद है। वर्तमान में भारतीय संस्कृति अपनी लंबी ऐतिहासिक यात्रा के दौरान सृजित मूल्यों को धारण किए हुए दिखती हैं । इनमें लोक कल्याण, तार्किकता, अपरिग्रह, संयम, समरसता, संवेदनशीलता और सजगता प्रभृति मूल्यों के नाम प्रमुखता से लिए जा सकते हैं। विभिन्न युगों में भारतीय समाज ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अपनी सहज बुद्धि से अपने आचरण का आकलन इन मूल्यों के आधार पर किया है। कमोबेश आज भी यही प्रयास भारतीय समाज में दिखता है। भारतीय सांस्कृतिक चेतना ने विभिन्न युगों की चुनौतियों का सामना ऊपर बताए गए मूल्य के आधार पर करते हुए सामंजस्यता का गुण सीख लिया है।

आधुनिक काल में त्रुटि, प्रयोग, परीक्षण, पर्यवेक्षण एवं सिद्धांत के आधार पर सत्य का अन्वेषण करने वाली वैज्ञानिक परंपरा भारतीय संस्कृति के लिए कोई नवीन विषय नहीं है। "सामान्यतः विज्ञान शब्द चार अर्थों

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

में प्रयुक्त होता है - ज्ञान प्राप्ति के एक बौद्धिक उद्यम के रूप में, बृहत्तर समाज से जुड़े संस्थानों के रूप में, प्रायोगिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के रूप में" 3 भारतीय ज्ञान परंपरा में तार्किकता एवं पर्यवेक्षण के आधार पर जीवन एवं ब्रह्मांड के रहस्यों को समझने के प्रयास होते रहे हैं। इसी क्रम में भारत में दर्शनशास्त्र, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित, अंतरिक्ष विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र और अभियांत्रिकी का विकास हुआ। "तकनीकी विशेष रूप से एक पुनरुत्पादनीय तरीके से व्यावहारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए वैचारिक ज्ञान का अनुप्रयोग है।"4 विज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर काम करने वाली तकनीकी, जिसने आज मनुष्य के जीवन को सरल बनाया है और ब्रह्मांड के रहस्यों को समझने में मनुष्य की सहायता की है, का विकास वर्तमान में निर्बाध तरीके से हो रहा है। भारतीय चेतना में ज्ञान का निरंतर बोध एवं शोध रहा है। भारत में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं तकनीकी, दार्शनिक एवं ज्ञान परंपरा के अभिन्न अंग रहे है। हालांकि यह बात भी समान रूप से सत्य है कि भारतीय समाज में अतार्किक तत्वों के माध्यम से इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बराबर चुनौती मिलती रही है। इन अतार्किक तत्वों ने समाज में अनेक ध्वंसात्मक एवं निषेधात्मक प्रभाव उत्पन्न किए। जड़ एवं मृत परंपराओं, अंधविश्वासों एवं पाखंडों के रूप में यह दृष्टिगोचर होता है। भारतीय समाज में सहज रूप से दिख जाने वाले दोषों के लिए इस अतार्किक विमूल्य-व्यवस्था को उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। संस्कृति एवं समाज में मूल्यों के विभिन्न आयामों के साथ-साथ विमूल्य भी विद्यमान रहते हैं। इन्हें नकारात्मक मूल्य भी कहा जाता है। मूल्यों के विपरीत विमूल्य संस्कृति एवं समाज में विखण्डन लाते हैं। उदाहरण के लिए हिंसा, घृणा, दुःख, लालच, भ्रष्टाचार आदि विमूल्य हैं। विमूल्यों की उत्पत्ति का कारण व्यक्ति की जैविक, मानसिक एवं सामाजिक विकास में बाधा आना है। "एक परिवर्तनशील समाज में इस प्रकार के मूल्य पाए जाते हैं जो कि उपयोगी हैं और साथ ही इस प्रकार मूल्य भी प्रचलित रहते हैं जो वर्तमान की आवश्यकताओं को देखते हुए गतावधिक तथा अनुपयोगी दिखाई पड़ते हैं।" 5

विज्ञान एवं तकनीकी के निरंतर विकास के परिणामस्वरूप आज हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में पहुंच चुके है। विज्ञान, तकनीकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव के विवेक के लिए चुनौती नहीं बल्कि एक सजग एवं आत्म रूपांतरण के लिए तैयार मानव को सहायता देने के उपकरणों की भांति है। इसलिए इन सहायक तत्वों को ध्यान में रखते हुए एवं इनके प्रति सजग रहते हुए यह आवश्यक है कि भारतीय समाज एवं संस्कृति स्वयं के वर्तमान तथा भविष्य की दिशा के बारे में चिन्तन करे। संस्कृति की विगत शताब्दियों के आलोक में भविष्य के लिए नये विकल्प के विषय पर विचार करने पर एक समता पर आधारित, नैतिक सद्गुणों से युक्त सृजनशील समाज की स्थापना ही भारतीय संस्कृति के अनुकरण करने वालों का लक्ष्य होना चाहिए। भारतीय मूल्य व्यवस्था (संस्कृति) अपनी सृजनात्मकता, तार्किकता, समरसता, संवेदनशीलता की प्रवृत्ति के आधार पर आज भी एक ऐसा विश्व दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है जिसकी सहायता से भारतीय समाज सहित संपूर्ण वैश्विक समाज निरंतर विकासमान सभ्यता की अपनी अस्तित्वगत एवं आगंतुक-लक्षणा चुनौतियों के लिए समाधान प्रस्तुत कर सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. हुसैन, एस. आबिद : 'भारत की राष्ट्रीय संस्कृति', दुर्गाशंकर शुक्ल(अनु.), राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, 1987, पृष्ठ 3
2. शल्य, यशदेव : 'संस्कृति : मानव - कर्तृत्व की व्याख्या', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1998, पृष्ठ 16
3. टंडन, आलोक : 'अस्मिता और अन्यता' , वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ 71
4. विकिपीडिया वेबसाइट : https://en.wikipedia.org/wiki/Technology
5. सिन्हा, डॉ. हिम्मत सिंह : 'संस्कृति दर्शन', हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, 1990, पृष्ठ 141